ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 568-571

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

महादेवी वर्मा की गद्य रचनाओं में चित्रित नारी विमर्श

डॉ0 वंदना पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज मुरादाबाद (उ0प्र0) भारत

Received- 05.08.2020,Revised- 09.08.2020, Accepted-13.08.2020 E-mail: - aaryvart2013@gmail.com

सारांश :हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका साहित्य व्यक्तित्व बहुआयामी है। उनकी रचनाओं में समाज की विपावन रूढ़ियों, भ्रष्टाचारों तथा कुण्ठाओं का ही बोलबाला है और उन्होंने उन रूढ़ियों, भ्रष्टाचारों को दूर करने का भरसक प्रयास भी किया है। उनकी पुस्तक श्रृंखला की में मुख्य विषय नारी है तो 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में भी नारी को स्थान मिला। महादेवी वर्मा नारी के लिए कहती हैं "भारतीय नारी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण प्रवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए सम्भव नहीं।"[1] उनके श्रृंखला की कड़ियों में नारी अथक तपस्या और साधना के बावजूद भी अत्यन्त उपेक्षित हैं। उन्होंने पुरुषों द्वारा स्त्री के लिए बनाये गये नियम, सामाजिक व्यवस्था पर सवाल खड़े किये हैं जिसे भारतीय नारी वर्षों से झेल रही है परन्तु यह सब कार्य आक्रोश से नहीं बल्कि शालीनता के साथ किया है, क्योंकि उनका मानना है कि जो कार्य शालीनता से किया जा सकता है वह विध्वंस से नहीं किया जा सकता। महादेवी जी स्त्रियों को जैसा देखना चाहती हैं, उसमें उनके स्वयं के जीवन जीने का निर्णय भी है।

कुंजीभूत शब्द– विपावन, कुण्ठाओं, बोलबाला, रूढ़ियों, भ्रष्टाचारों, चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला ।

महादेवी जी ने जब स्त्रियों की समस्याओं पर सोचना लिखना शुरू किया था तो उन्हें किसी तरह का प्रलोभन नहीं था, न ही उस समय कोई एन० जी० ओ० था, न ही बाहर से आने वाला कोई पैसा था। उनके जीवन में यह स्वयं का अनुभव था जब उन्होंने 'श्रृंखला की कड़ियाँ का लिखना प्रारम्भ किया। जिन कड़ियों को वे स्वयं तोड़ चुकी थीं उनकी इच्छा थी कि वे उनकी संगिनियों के लिए भी टूटे। महादेवी वर्मा ने लिखा है "स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय नारी की स्थिति में राजनीतिक और वैधानिक दृष्टि से जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए में परिवर्तन नहीं हो सका।"[2] उनके अनुसार समाज महादेवी वर्मा का जहाँ 'अतीत के चलचित्र' 'में 'भाभी' सविया, बालिका, माँ, अभागी स्त्री,आदि में दिल दहला देने वाली घटनाओं का वर्णन किया है वहीं 'स्मृति की रेखाएँ' में भी 'विविया' और 'गुंगिया' भी ऐसे ही मार्मिक पात्र हैं। महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को भी उजागर किया है और उसे यथासम्भव दूर करने का प्रयत्न भी किया है। अपने 'अतीत के चलचित्र' में बिट्टों के विवाह के हवाले से नकारात्मक जर्जर वैवाहिक रूढ़ियों पर व्यंग्य करती हुई कहती है "जिस समाज में चौसठ वर्ष का व्यक्ति चौदह वर्ष की पत्नी चाहता है। वहाँ बत्तीस वर्ष की बिट्टों के पुनर्विवाह की समस्या सुलझा लेना टेढ़ी खीर थी। उसके भाग्य से ही 150 वर्ष की पूर्णायु वाला कोई पुरुष न मिला और उसके जन्म–जन्मान्तर के अखण्ड पुण्य फल से हमारे 54 वर्ष के बाबा ने उसके उद्धार का बीड़ा उठाया।"[3]

'अतीत के चलचित्र' महादेवी वर्मा की समाज केन्द्रित रचना है। इस संसार में नारी का मन से ग्रसित है महादेवी जी नारी की समस्याओं से दुखित हैं। वे कहती हैं "जैसे ही दबे स्वर दुःख से लक्ष्मी के आगमन का समाचार दिया गया, वैसे ही घर के एक कोने से दूसरे तक दरिंद्र निराशा व्याप्त हो गई। बड़ी–बूढ़ियाँ संकेत से मूक गानेवालियों को जाने के लिए कह देती और बड़े बूढ़े इशारें से नीरव बाजा वालों को बिदा देते हैं–यदि ऐसे अतिथि का भार उठाना परिवार की शक्ति से बाहर होता, तो उसे बैरंग लौटा देने के उपाय भी सहज थे।"[4]

महादेवी वर्मा कहती हैं कि बहुत लम्बी प्रतीक्षा के पश्चात मेरा जन्म हुआ इस लिए बाबाजी ने कुलदेवी दुर्गा मान कर मेरा नाम महादेवी वर्मा रखा और यही दुर्गा भाव मेरे मन को विद्रोही बनाता रहा और नारी के अस्मिता के लिए संहार करता रहा। उनके 'अतीत के चलचित्र' में नारी को जीवन की समस्याओं से जूझते, बाल विवाह, विधवा, विवाह, विमाता का दुर्व्यवहार, आदि की पीड़ा से जिसमें नारी को निरन्तर संघर्ष करते हुए दर्शाया गया है। रूढ़ियों से और परम्पराओं से ग्रसित समाज में नारी अपमानित, प्रताड़ित होकर अधिकार हीन जीवन जीने के लिए मजबूर है। उनके 'अतीत के चलचित्र' में 'भाभी' उन्नीस वर्षीय एक मारवाड़ी विधवा बहू है जो अर्थहीन जीवन जीने के लिए विवश हैं। यदि हिन्दू स्त्री विधवा हो जाये तो उसका जीवन बिल्कुल अर्थहीन हो जाता है उस के लिए अनेक नियम कानून बना दिया जाता है वे कहती हैं "वह तो

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

विधवा ठहरी। दूसरे समय भोजन करना ही यह प्रमाणित कर देने के लिए पर्याप्त था कि उसका मन विधवा के संयम प्रधान जीवन से ऊबकर किसी विपरीत दिशा में जा रहा है।"[5] महादेवी जी उस 'भाभी' पात्र की, जो घटना के समय बहुत छोटी थी जिससे विधवा जीवन की समझ उन्हें बाद में आयी वे कहती हैं "उस 19 वर्ष की युवती की दयनीयता आज समझ पाती हूँ, जिसके जीवन के सुनहरे स्वप्न गुड़ियों के घरौंदे के समान दुर्दिन की वर्षा में केवल वह ही नहीं गये, वरन् उसे इतना एकाकी छोड़ गये कि उन स्वप्नों की कथा कहना भी सम्भव न हो सका।"[6]

उस मारवाड़ी विधवा 'भाभी' के सिर पर रंगीन ओढ़नी डालने पर उसके ससुर, ननद द्वारा किये गये अत्याचार से आठ वर्षीय बालिका महादेवी को गहरा आघात लगा वे कहती हैं "उस घटना से बालिका प्रौढ़ हो गयी थी और युवती वृद्धा"।"[7]

'अतीत के चलचित्र' में सौतेली माता के दुर्व्यवहार से ग्रसित महादेवी की बाल्यसखी 'बिन्दा' हैं। महादेवी के अनुसार "बिन्दा मेरी उस समय की बाल्यसखी थी जब मैंने जीवन और मृत्यु का अमिट अन्तर जान नहीं पाया। बिन्दा अपनी विमाता के द्वारा किये गये दुर्व्यवहार से प्रताड़ित थी। विन्दा के छोटी सी छोटी गलती पर भी विमाता कठोर दण्ड देती थी क्योंकि सौतेली माँ के न्याय में न क्षमा का स्थान था न बिन्दा को अपील का अधिकार।"[8]

महादेवी के अनुसार "गर्मी की दोपहर में मैंने बिन्दा को आँगन की जलती धरती पर बार–बार पैर उठाते और रखते हुए घण्टों खड़े देखा था, चौके के खम्भे से दिन–दिन घर बँधा पाया था और भूख से मुरझाये मुख के साथ पहरों नयी अम्मा और खटोले में सोते मोहन पर पंखा झलते देखा था।"[9] विमाता के प्रताड़ना को सहन करते 'बिन्दा' की चेचक से बाल्यावस्था में ही मृत्यु हो गयी। "कई दिन तक बिन्द के झाँक झाँककर जब मैंने माँ से उसके ससुराल से लौटने के सम्बन्ध में प्रश्न किया, तब पता चला कि वह तो अपनी आकाश–वासिनी अम्मा के पास चली गयी। "[10]

अतीत के चलचित्र' में 'सबिया' ऐसी नारी है जो किसी परिस्थिति के आगे हार नहीं मानती वह पति द्वारा तिरस्कृत अन्धी सास और बच्चों के साथ–साथ सौत गेंदा का भी बोझ उठाने वाली कर्मठ महिला है।

महादेवी लिखती है "बिना एक शब्द कहे सबिया ने नीली साड़ी उतारकर मै के हाथ में थमा दी और स्वयं पुरानी पहनकर अन्धी सास को रोकते रहने पर गेंदा को घर लिवा लाने चली गयी।"[11] सबिया अपने कर्म में दक्ष है उसे सौत क्या होता यह सब सोचने का वक्त ही नहीं है। महादेवी का मानना है "सच तो यह कि मैं सबिया को उस पौराणिक नारीत्व के निकट पाती हूँ जिसने जीवन की सीमा रेखा किसी अज्ञात लोक तक फैला दी थी। उसे यदि जीवन के लिए मृत्यु से लड़ना पड़ा, वह न मरने के लिए जीवन से संघर्ष करती है।"[12]

'अतीत के चलचित्र' में बालिका माँ एक ऐसी शोषित स्त्री है जो बाल्यावस्था में ही विधवा हो जाती है और व्यभिचार से उत्पन्न सन्तान को जन्म देती है। इस पर महादेवी जी लिखती है। सामाजिक विकृति का बौद्धिक निरूपण मैंने अनेक बार किया है पर जीवन की इस विभिषिका में मेरा पहला साक्षात है। लाला जी चाहते हैं कि किसी तरह से इस नवजात शिशु से छुटकारा मिल जाये परन्तु वह बालिका माँ इस कार्य के लिए तैयार नहीं हुई। इस कुकृत्य कार्य पर महादेवी प्रहार करते स्त्रियों को कहती हैं "यदि यह स्त्रियाँ अपने शिशु को गोद में लेकर साहस से कह सके हुए कि 'बर्बरो, तुमने हमारा नारीत्व, पत्नीत्व सब ले लियाः पर हम अपना मातृत्व किसी प्रकार न देंगी' तो इनकी समस्याएँ तुरन्त सुलझ जावें। "[13]

अतीत के चलचित्र' में शोषित नारी 'अभागी स्त्री है'। महादेवी के अनुसार "वह पतित कहाँ जाने वाली माँ की पुत्री है और बिना समाज के प्रवेश–पत्र के ही साध्वी स्त्रियों के मन्दिर में प्रवेश करना चाहती थी।"[14] 'अभागी स्त्री' वेश्या पुत्री होने के कारण पत्नी रूप में न्यायोचित अधिकार नहीं पाती उसके पति की मृत्यु के पश्चात् उसकी समस्या और जटिल जाती है। ससुर द्वारा प्रताड़ित किये जाने पर भी न्याय का अधिकार नहीं माँगती। महादेवी जी लिखती हैं "जिस घर पर उसका न्यायोचित अधिकार था, उसी में पग भर भूमि की भीख माँगने के लिए आँचल फैलाकर दीनता से कहाकृ'घर में कई नौकर–चाकर हैं।

मेरे लिए दो मुट्ठी आटा भारी न होगा। मैं भी आपको सेवा करती हुई पड़ी रहूँगी।"[15] अन्त में उस अभागी स्त्री को उसका अधिकार नहीं मिल सका और वह 'विधवा आश्रम' में जाकर जीवन यापन करते हुए उसने महादेवी जी को पत्र लिखकर अपना कुशल क्षेम बताया और महादेवी जी से पूछा हम जैसी स्त्रियों के लिए जो आश्रम आप खोलना चाहती थीं वह कब खोलेंगी? तब महादेवी जी अपने मन से सवाल पूछती है "क्या तुझे आज भी समाज द्वारा मिले भलाई–बुराई के प्रमाण–पत्रों पर विश्वास है। "[16]

"अतीत के चलचित्र की पहाड़ी लड़की 'लक्षमा' ससुराल में सुख से नहीं रह पाई वह वालों के अत्याचार और समाज की उपेक्षा सहकर भी किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखती। महादेवी के अनुसार "अपने सम्बन्धियों के अत्याचार के सम्बन्ध में उसने एक शब्द भी मुँह से न ससुराल निकलने दिया, क्योंकि इससे उसके विचार में 'घर की मर्जाद'

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

चली जाती।''[17] 'लक्षमा' की उपेक्षा तब और होती है जब उसके ससुराल वाले उसके मन्दबुद्धि पति को लेकर लक्षमा के मायके आये और उसे ससुराल ले जाना चाहा, परन्तु लक्षमा ने पति को मायके में ही रखकर सेवा करने का अनुरोध किया परन्तु उसके ससुराल वालों ने पति को वहाँ नहीं छोड़ा जिससे समाज में उसके बारे में तरह–तरह की बातें होने लगी। महादेवी जी लिखती हैं ''एक पुरुष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने को उतारू हो जाता है और एक स्त्री के साथ क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियाँ उसके अकारण दण्ड को अधिक भारी बनाये बिना नहीं रहती।''।[8]

समाज में उपेक्षित और तिरस्कृत महादेवी के 'स्मृति की रेखाएँ' की बिबिया है। 'बिबिया' के सम्बन्ध में महादेवी जी लिखती हैं ''पाँचवे वर्ष में ब्याह भी हो गया, पर गौने से पहले ही वर की मृत्यु ने उस सम्बन्ध को तोड़कर, जोड़ने वालों का प्रयत्न निष्फल कर दिया। ऐसी परिस्थिति में, जिस प्रकार उच्च वर्ग की स्त्री का गृहस्थी बसा लेना कलंक है, उसी प्रकार नीच वर्ग की स्त्री का अकेला रहना सामाजिक अपराध है।''[19] इस प्रकार बिबिया की शादी भाई कन्हई ने पुनः दूसरे व्यक्ति रमई से किया परन्तु वहाँ भी उसे तिरस्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। रमई जुआरी और नशेड़ी था उसने एक दिन अपनी पत्नी को दाँव पर लगा दिया यह बात बिबिया को पता चल गयी तब ''उसने एक दिन करीम मियाँ को अपने द्वार पर देख लिया।

बस फिर क्या थाकृभीतर से तरकारी काटने का बड़ा चाकू निकालकर और भौंहे टेढ़ी कर उसने उन्हें बता दिया कि रमई के ऐसी हरकत करने पर वह उन दोनों के पेट में यही चाकू भोंक देगी। फिर चाहे उसे कितना ही कठोर दण्ड क्यों न मिले।''[20] बिबिया कहती है ''वह ऐसी गाय बछिया नहीं है, जिसे चाहे कसाई के हाथ बेच दिया जावे, चाहे वैतरणी पार उतरने के लिए महाब्राह्मण को दान कर दिया जावे।''[21]

'बिबिया' के इस निडरता पूर्वक कार्य से रमई ने उसे घर से निकाल दिया, तब वह मायके पुनः रहने लगी भाई कन्हई ने समाज में होने वाले बदनामी के कारण उसका विवाह पुनः पाँच बच्चों के वाप, अधेड़ विधुर से कर दिया। महादेवी के अनुसार ''बिबिया पति के उदासिन आदर–भाव से प्रसन्न थी या अप्रसन्न, यह कोई कभी न जान सका, क्योंकि उसने घर और बच्चों में तन–मन से रम कर अन्य किसी भाव के आने का मार्ग ही बन्द कर दिया।[22] महादेवी जी ने स्पष्ट कर दिया कि बिबिया सर्वथा निर्दोष है दोष तो समाज का है जिसने अबला नारी को अपराधी घोषित कर दिया। महादेवी जी लिखती हैं ''संसार ने उसे अकारण अपमानित किया और वह उसे युद्ध की चुनौती न देकर भाग खड़ी हुई,[23] यह कल्पना मात्र उसके आत्मघाती संकल्प को, बरसने से पहले आँधी में पड़े हुए बादल के समान कहीं–का–कहीं पहुँचा सकती थी। पर संघर्ष के लिए उसके सभी अस्त्र टूट चुके है। जन्म के पाँच वर्ष के बीत जाने पर भी जब यह नहीं बोलती तो उसके माता–पिता द्वारा ताबीज बाँधे गये। जन्तर मन्तर का सहारा लिया गया, झाड़–फूंक का उपचार हुआ। मानता पूजा, अनुष्ठान आदि की शक्ति–परीक्षा हुई, पर धनपतिया पर वाणी कृपास्नु न हो सकी।[24] मियां के पिता ने उसका ऐब छिपाकर जैसे–जैसे विवाह किया परन्तु ससुराल में गूंगापन का पता चलते हो मार–पीट कर उसे घर से निकाल दिया गया। ''उसने बड़ी दीनता से सास के पैर पकड़ लिये और लात खाने पर भी उन्हीं में मुख छिपाये हुए रोती रही, पर किसी का ह्रदय न पसीजा। पाया तो धोखा ही है। जिसने उनके साथ छल–कपट का व्यवहार किया, वह यदि स्वयं दण्ड न भोगे, तो उसकी सन्तान को तो भोगना ही पड़ेगा। अन्यथा न्याय की महिमा कहाँ रहेगी।''[25]

महादेवी वर्मा अपनी गद्य रचनाओं 'श्रृंखला की कड़ियाँ' 'अतीत के चलचित्र और 'स्मृति की रेखाओं' के माध्यम से नारी विमर्श के विविध आयाम को प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शृंखला की कड़ियाँ–महादेवी वर्मा, पू० 9.
2. नये दशक में महिलाओं का स्थान–महादेवी वर्मा, पू० 12य 3. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, पू० 47.
4. अतीत के चलचित्र–महादेवी वर्मा, पृ० 18.
5. अतीत के चलचित्र–महादेवी वर्मा, पू० 27.
6. अतीत के चलचित्र–महादेवी वर्मा, पू० 27.
7. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, पू० 30.
8. अतीत के चलचित्र महादेवी वर्मा, पू० 3187.
9. अतीत के चलचित्र–महादेवी वर्मा, पू० 34.
10. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, पृ० 36.
11. अतघ्त के चलचित्र महादेवी वर्मा, पू० 41.
12. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, पू० 43.
13. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, पू० 54.
14. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, पू० 68.
15. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, पृ० 70.
16. अतीत के चलचित्र महादेवी वर्मा, पू० 70.
17. अतीत के चलचित्र महादेवी वर्मा, पृ० 91.
18. अतीत के चलचित्र महादेवी वर्मा, पृ० 97.
19. स्मृति की रेखाएँ– महादेवी वर्मा, पू० 85.
20. स्मृति की रेखाएँ– महादेवी वर्मा, पृ० 87.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

21. स्मृति को रेखाएँ– महादेवी वर्मा, पू० 87.
22. स्मृति की रेखाएँ– महादेवी वर्मा, पृ० 90.
23. स्मृति की रेखाएँ– महादेवी वर्मा, पृ० 97.
24. स्मृति की रेखाएँ– महादेवी वर्मा, पृ० 108.
25. स्मृति को रेखाएँ– महादेवी वर्मा, पृ० 109.

*****